# साथी ! दु:ख से घबराता है ?

**गोपालदास 'नीरज'**

**कवि परिचय :**

गोपालदास 'नीरज' का जन्म पुरावली, जिला इटावा (उत्तर प्रदेश) में सन् 1926 ई. में हुआ । बचपन में ही उनके पिता चल बसे । इसलिए 'नीरज' ने अपनी चेष्टा से पढ़ा । एम.ए. किया । फिर नौकरी की । अपने को बनाया । 'संघर्ष', 'विभावरी', 'नीरज की पाती', 'प्राणगीत', 'दो गीत', 'मुक्तावली', 'दर्द दिया है', 'बादर बरस गयो' आदि 'नीरज' के लोकप्रिय काव्य-संग्रह हैं । 'नीरज' के गीतों में जीवन के सहज अनुभव अभिव्यक्त हुए हैं । इसलिए वे सब के मन को छू पाते हैं । गीत गाए जाते हैं तो और भी सरस होते हैं ।

**भाव-बोध :**

इस कविता में कवि अपने साथी को दु:ख से न डरने की सलाह देता है । न डरने से दु:ख भी सुख बन जाता है । मानव-जीवन में दु:ख ज्यादा होता है । सुख बहुत कम । तो फिर दु:ख से डरने से, रोने-चीखने से दु:ख दूर नहीं होता । दु:ख से लड़ना सही रास्ता है । दु:ख के बाद सुख आएगा । ज़रूर आएगा, क्योंकि दु:ख सर्वदा नहीं रह सकता । दु:ख भोगते हुए कोई मर जाय तो भी कोई डर नहीं । डरने से वह दु:ख से बच तो नहीं सकता न ! जीवन में दु:ख होने के कारण हम सब कर्मतत्पर बने रहते हैं । दु:ख पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं । जिस प्रकार जलती आग में जलने के कारण लोहे में कालिमा की जगह लालिमा आ जाती है, उसी प्रकार मानव-जीवन में दु:ख रूपी संघर्ष के कारण व्यक्तित्व का उत्कर्ष प्रतिपादित होता है । इसलिए कवि 'नीरज' का यह संदेश है कि दु:ख को बुरी चीज़ न मानकर मुक्ति का मार्ग मानना चाहिए ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
दु:ख ही कठिन मुक्ति का बंधन,
दु:ख ही प्रबल परीक्षा का क्षण,
दु:ख से हार गया जो मानव, वह क्या मानव कहलाता है ?

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
जीवन के लम्बे पथ पर जब
सुख दु:ख चलते साथ-साथ तब
सुख पीछे रह जाया करता दु:ख ही मंजिल तक जाता है ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
दु:ख जीवन में करता हलचल,
वह मन की दुर्बलता केवल,
दु:ख को यदि मान न तू तो दु:ख ही फिर सुख बन जाता है ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
पथ में शूल बिछे तो क्या चल
पथ में आग जली तो क्या जल
जलती ज्वाला में जलकर ही लोहा लाल निकल आता है ।

साथी ! दु:ख से घबराता है ?
धन्यवाद दो उसको जिसने
दिए तुझे दु:ख के तो सपने,
एक समय है जब सुख ही क्या ! दु:ख भी साथ न दे पाता है ।
साथी ! दु:ख से घबराता है ?

## शब्दार्थ

मुक्ति - आज़ादी, स्वतंत्रता । प्रबल - बड़ा, भारी, प्रचंड । क्षण - घड़ी, पल, वक्त । मंजिल - लक्ष्य । हलचल - हिलने-डोलने की क्रिया या भाव । दुर्बलता - कमज़ोरी । शूल - काँटा । ज्वाला - अग्नि शिखा, लौ, लपट ।

## प्रश्न और अभ्यास

**1. इन प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :**

(क) कवि दु:ख से न घबराने को क्यों कहते हैं ?

(ख) इस कविता का संदेश क्या है - समझाइए ।

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए :**

(क) कवि ने मुक्ति का बंधन किसे माना है ?

(ख) जीवन के लम्बे पथ पर कौन साथ-साथ चलते हैं ?

(ग) जीवन की मंजिल तक कौन जाता है ?

(घ) जीवन में हलचल कौन लाता है ?

(ङ) जलती ज्वाला में जलकर क्या लाल बन निकलता है ?

(च) कवि ने किसे धन्यवाद देने को कहा है ?

(छ) दु:ख कब सुख बन जाता है ?

**3. पंक्तियाँ पूरा कीजिए :**

(क) जीवन के .....

सुख दु:ख चलते साथ-साथ तब

(ख) दु:ख जीवन में करता .....,

वह मन की ..... केवल ।

(ग) जलती ..... में जलकर ही ..... लाल निकल आता है ।

(घ) एक समय है जब ..... ही क्या !

..... भी साथ न दे पाता है ।

**4. सही अर्थ चुनिए :**

(क) प्रबल परीक्षा का क्षण क्या है ?

(i) सुख

(ii) दु:ख

(iii) आनंद

(ख) किसमें जलकर ही लोहा लाल निकल आता है ?

(i) दु:ख में

(ii) सुख में

(iii) जलती ज्वाला में

## भाषा - ज्ञान

**1. विपरीत अर्थवाले शब्द लिखिए :**

कठिन :_____ दु:ख :_____

बंधन :_____ मुक्ति :_____

दुर्बलता :_____ हार :_____

**2. इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :**

परीक्षा, समय, मंजिल, बंधन

**3. लिंग बताइए :**

लोहा, आग, हार, ज्वाला, पथ, दु:ख

**4. बहुवचन रूप लिखिए :**

एक :_____ सपना :_____

परीक्षा :_____ मंजिल :_____

**5. 'जीवन के लम्बे पथ पर जब'... में 'पथ' संज्ञा है और 'लम्बे' विशेषण है जिससे पथ की लम्बाई सूचित हुई है । निम्न वाक्यों में विशेषणों को रेखांकित कीजिए :**

(क) कोयल की आवाज़ सुरीली होती है ।

(ख) मुझे पाँच रुपये चाहिए ।

(ग) हमें गरीब जनता की सेवा करनी चाहिए ।

(घ) रमेश एक मेधावी छात्र है ।

**गृहकार्य :**

**1.** अपने जीवन में आये दु:ख के क्षण का वर्णन कीजिए ।

**2.** इस कविता को कंठस्थ कीजिए ।

●